International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 20-12-2025, Accepted: 19-01-2026, Published: 03-02-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 69-71

चित्रा मुद्गल के उपन्यास साहित्य में वर्णित नारी

अमित पटेल
शोधार्थी, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
हिन्दी कथा साहित्य में चित्रा मुद्गल का रचनात्मक योगदान विशेष रूप से नारी जीवन के संघर्ष, पीड़ा, अस्मिता और आत्मनिर्भरता के यथार्थ चित्रण के लिए उल्लेखनीय है। उनका साहित्य नारी जागरण की चेतना से अनुप्राणित है, जहाँ स्त्री को केवल करुणा की पात्र न बनाकर संघर्षशील, सजग और आत्मसम्मान के प्रति सचेत व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया गया है। चित्रा मुद्गल ने पितृसत्तात्मक समाज, सामंती मूल्यों, पूँजीवादी व्यवस्था तथा भूमंडलीकरण और बाजारवाद के प्रभाव में बदलते स्त्री जीवन की जटिलताओं को अपने उपन्यासों के माध्यम से सशक्त अभिव्यक्ति दी है।
'एक जमीन अपनी', 'आवां', 'गिलिगडु' आदि उपन्यासों में विज्ञापन, मॉडलिंग, पत्रकारिता जैसे आधुनिक क्षेत्रों में कार्यरत स्त्रियों के माध्यम से उन्होंने नारी देह के बाजारीकरण, शोषण के नए रूपों तथा नैतिक द्वंद्वों को उजागर किया है। साथ ही उनके नारी पात्र आर्थिक आत्मनिर्भरता, प्रेम में विफलता, सामाजिक रूढ़ियों के विरोध और व्यक्तिगत निर्णयों के माध्यम से अपनी अस्मिता की रक्षा करते दिखाई देते हैं। चित्रा मुद्गल का साहित्य नारीवाद के कट्टर आग्रह से अलग मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाते हुए स्त्री–पुरुष के सामंजस्य, मानवीय मूल्यों और सामाजिक यथार्थ को रेखांकित करता है। इस प्रकार उनका कथा साहित्य समकालीन भारतीय समाज में नारी जीवन की दशा और दिशा का प्रामाणिक दस्तावेज है।

मूल शब्दः चित्रा मुद्गल, नारी चेतना, नारी अस्मिता, आत्मनिर्भरता, पितृसत्ता, विज्ञापन एवं मॉडलिंग, बाजारवाद, समकालीन हिन्दी उपन्यास, नारी संघर्ष, मानवतावाद

हिन्दी कथा साहित्य जगत् में चित्रा मुद्गल का साहित्य अपनी एक अलग पहचान रखता है। नारी जागरण उनके लेखन का प्रिय विषय रहा है और यही कारण है कि उन्होने अपने कथा साहित्य में मुख्य रूप से नारी जीवन की त्रासदी और संघर्षशीलता को चित्रित किया है। उनका व्यक्तित्व एक भारतीय नारी की गरिमा से परिपूर्ण है तथा लेखन के स्तर पर वह उतनी ही जागरूक, चेतनायुक्त एवं मुखर हैं। उन्होंने संवेदनाओं, मानवीय मूल्यों और नारी की दशा और दिशा से संबंधित विभिन्न पहलुओं को अपनी सूक्ष्मदृष्टि और मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति प्रदान की है। पितृसत्तात्मक समाज में नारी को प्रेरणास्रोत, पालन–पोषण की उत्तरदायिनी, उन्नयन का आधार, संचायिका आदि के रूप में न मानकर उन्हें दबी, कुचली और उपभोग की वस्तु माना जाने लगा। किन्तु समकालीन परिवेश में शिक्षा–दीक्षा एवं विदेशी सभ्यता का प्रभाव आदि द्वारा नारी सजग हो गयी और अपनी अस्मिता के लिए लड़ने लगी। नारी को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाना चित्रा जी का लक्ष्य है। वास्तव में वे नारीवादी नहीं हैं, किन्तु मानवतावादी होने के कारण अपनी रचनाओं में नारी की पीड़ाओं का चित्रण करती हैं।

बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न चित्रा मुद्गल का साहित्य इनके अनुभवों का विपुल भण्डार है। उन्होने अपने जीवन के खट्टे–मीठे अनुभवों को जिसे उन्होंने जिया और भोगा है, उसे ही अपने साहित्य में व्यक्त भी किया है। चित्रा मुद्गल का ताल्लुक जमींदार घराने से होने के कारण वे बचपन से ही विद्रोही प्रवृत्ति की रही। इनका यह विद्रोह अपने सामती पिता, परिवार व पूँजीपति व्यवस्था के प्रति रहा है। इनके परिवार में भी स्त्रियों की स्थिति बहुत दयनीय थी। स्त्री पुरुष के लिए अलग–अलग नियम थे। स्त्रियाँ घर के मुख्य दरवाजे से बाहर नहीं जा सकती थी। पुरुषों का आज्ञा पालन करना ही इनका मुख्य धर्म होता था। इन खोखले आडम्बरों के प्रति चित्रा जी के मन में विद्रोह की भावना जागृत हुई। इन्होने इस व्यवस्था से लड़ने के लिए अपनी कलम को तलवार की तरह इस्तेमाल किया। इनका साहित्य हृदय की सूक्ष्म संवेदनाओं को व्यक्त करता है। चित्रा जी के जीवन की विविधता व संघर्ष इनके साहित्य में भी परिलक्षित होता है। इनके अब तक कुल पाँच उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं, जो क्रमशः – एक जमीन अपनी (1990), आवा (1999), गिलिगडु (2003) व पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा (2016) तथा नकटौरा (2022) है।

आज कोई ऐसा पद नहीं है जिसे स्त्रियों द्वारा अछूता कहा जा सके। आज स्त्री भी धनार्जन कर रही है। फिर भी एक दुखद बात है कि स्त्री आज भी गुलाम है व उपभोग की वस्तु है, अंतर यह है कि इक्कीसवीं सदी में शोषण का रंग एवं रूप बदल गया है। भारतीय समाज में नारी का जीवन कितना संघर्षपूर्ण एवं करुणा पूर्ण है, इसका सही रूप पाठकों के सामने चित्रा जी ने प्रस्तुत किया है।

स्त्रियाँ पहले कुछ परम्परागत क्षेत्र में ही जैसे अध्यापिका, डाक्टर आदि ही हुआ करती थी किन्तु आज आधुनिक नारी आत्मनिर्भर है बनने की चाह में बहुत तेजी से विभिन्न क्षेत्रों में जा रही है। उन्हीं में से एक विज्ञापन व मॉडलिंग का क्षेत्र है जो शायद यह स्त्रियों के बिना पूर्णतः अधूरा है। आज का दौर भूमण्डलीकरण व बाजारवाद का है। आज समाज का कोई भी हिस्सा इससे अछूता नहीं है। विज्ञापन जगत की चकाचौध को देख कर आज की नारी अपना कैरियर, नाम, पैसा बनाने के लिए इस जगत में स्वेच्छा से जा रही है।

'एक जमीन अपनी' उपन्यास में नीता और अंकिता दोनों ही मॉडलिंग व विज्ञापन क्षेत्र से जुड़ी हुई है। अंकिता के पास प्रतिभा और हुनर होते हुए भी उसके स्थान पर नीता को स्थायी नियुक्त कर लिया जाता है। अंकिता भारतीय परम्परागत मूल्यों को साथ लेकर चलती है, किन्तु नीता पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण कर अपने नाम व प्रसिद्धि के लिए सारी वर्जनाएं तोड़ने को तैयार है। चित्रा जी पत्रकारिता की दुनियां में काम करते हुए मॉडलिंग और विज्ञापन की दुनिया को अधिक निकट से देखा, समझा व परखा है। उसी यथार्थ को अपने उपन्यास 'एक जमीन अपनी' और 'आवां' में अभिव्यक्त किया। चित्रा जी ने विज्ञापन एवं मॉडलिंग के चकाचौंध और उसके पीछे की स्याह व सच्चाई से समाज को अवगत कराया।

आज उत्पादों पर नारी देह का नग्न चित्रण अधिक रहता है तथा उत्पादों की विशेषताओं की चर्चा कम। नीता अंकिता से कहती है– "यह ग्लैमर की दुनिया है अंकू ३। यहाँ जीने की, जी पाने की पहली शर्त है—विशिष्ट दिखना, विशिष्ट करना, विशिष्ट होना, विशिष्ट बनना—जो वास्तविकता नहीं है।"[1] नीता स्वयं स्वीकार करती है कि वह जो कुछ भी हासिल करना चाहती है उसके लिए वह किसी भी सीमा तक जा सकती है।

आज नारी अपने अधिकारों व अस्तित्व के प्रति सजग हुई है तो उसमें अधिक भूमिका उसकी आत्मनिर्भरता है। आदिकाल से ही नारी आर्थिक दृष्टि से पुरुषों के पराधीन रही है; परन्तु जैसे–जैसे नारी शिक्षा के प्रति जागरुक हुई वैसे–वैसे उनके व्यक्तित्व में निखार आया और वह समाज को अपने दृष्टि से देखने लगी। अपने बुद्धि का प्रयोग कर अपने फैसले स्वयं लेने लगी। चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में ऐसे नारी पात्र बहुतायत हैं जो आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने के लिए संघर्षरत है। 'आवा' उपन्यास में नमिता अपने पिता के लकवाग्रस्त होने पर नौकरी की तलाश में भटकती है। घर की कठिन परिस्थितियों, अभावों और पटरी से उतरे जीवन को पटरी पर लाने के लिए वह माँ के साथ पापड़ बेलती, साड़ी में फाल लगाती, बच्चों को ट्यूशन पढ़ाती तथा रोजगार के लिए रोजगार कार्यालय का चक्कर भी लगाती। नमिता की तरह ही 'आवां' की प्रत्येक नारी पात्र आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर दिखाई देती है, चाहे वह शिक्षित नारी पात्र हों या अशिक्षित। वे सभी नारी पात्र आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर हैं।

चित्रा मुद्गल के कथा–साहित्य में नारी पात्र अपने अस्तित्व व अस्मिता के प्रति सजग व सचेत होते दिखाई देते हैं जिसमें 'एक जमीन अपनी' की अंकिता, 'आवां' की नमिता, सुनंदा, स्मिता, निलम्मा, 'गिलिगडु' की सुनगुनिया आदि प्रमुख नारी पात्र हैं। 'एक जमीन अपनी' की अंकिता अपने परिवार के मर्जी के विरुद्ध सुधांशु से विजातीय प्रेम–विवाह करती है लेकिन सुधांशु के निरंकुश प्रवृत्ति से तंग आ कर तीन वर्ष के भीतर ही उससे अलग हो जाती है। वह सुधांशु की ऐय्याशियों और ज्यादतियों से घृणा करती है। अंकिता किसी भी परिस्थिति में आत्म सम्मान की रक्षा करती है तथा अश्लीलता का आश्रय लेकर उत्पाद को बेचने के विरूद्ध हैं।

'आवां' उपन्यास की नमिता भी अपने जीवन के घात – प्रतिघातों से जुझते – भिड़ते अंततः वह अपने अस्तित्व की रक्षा करती है। जर्जर हालातों और कठिनतर परिस्थितियों में भी वह पिता तुल्य अन्ना साहब के तुच्छ हरकतों से तंग आ कर वह अपने आत्म सम्मान की रक्षा के लिए नौकरी छोड़ देती है।

सिद्धार्थ मेहता हिन्दुस्तान का एक मात्र शीर्षस्थ छायाकार है जो किसी का भी फोर्ट फोलियों बनाकर उसे प्रसिद्धि दिला सकता है। जब वह नमिता से उसका पोर्टफोलियों बनाने के एवज में प्रत्येक अनुबंध पर साठ प्रतिशत लेने के साथ ही उसके साथ दैहिक सम्बन्ध बनाने की बात करता है तो नमिता स्पष्ट शब्दों में करारा जवाब देती है– "आपके प्रस्ताव पर मैं थूकती हूँ, सिद्धार्थ जी! शुभ चिन्तक को तो अपने भविष्य की जिम्मेवारी सौंपी जा सकती है, दलाल को नहीं। दलाल को तो हर औरत रंडी नजर आती है। बेहतर होगा आप फोटोग्राफी छोड़ चकला खोल लें।"[2] नमिता किसी भी स्थिति, परिस्थिति में अपने अस्तित्व व अस्मिता से समझौता करने को तैयार नहीं।

'आवां' की सुनंदा झोपड़ पट्टियों में पली–बढ़ी स्त्री है लेकिन उसकी अंतश्चेतना बहुत ही प्रखर है। सुनन्दा निडर, साहसी व अपने अस्तित्व व अधिकारों को लेकर सजग है। सुनन्दा एक सुहेल नाम के मुस्लिम युवक से प्रेम करती है और उससे विवाह भी करना चाहती है, लेकिन अपने आत्मसम्मान को ताख पर रख कर नहीं ।

चित्रा मुद्गल को कुछ लोग स्त्रीवादी लेखिका कहते है लेकिन इनके साहित्य को पढ़कर यह स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है कि वह स्त्रीवादी नहीं अपितु स्त्री व पुरुष के सामंजस्व को महत्व देती हैं। इनके साहित्य में ना ही सभी पुरूष खल पात्र हैं ना ही सभी स्त्रियां देवी।

चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में नारी के पारम्परिक व आधुनिक दोनों रूप देखने को मिलते हैं। आधुनिकता के नाम पर आज स्त्रियां स्वछन्द हो रही हैं। पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण कर वैवाहिक संस्था व कौटुम्बीय जीवन को नकार करके अपनी शर्तों पर स्वच्छन्द जीवन जी रही है। 'आवा' उपन्यास की गौतमी जो पहले मध्यम वर्ग की स्त्री थी, उच्च वर्ग की दुनियाँ में आकर काफी बदल जाती है। आर्थिक रूप से स्वावलम्बन ने उसकी चेतना को काफी प्रभावित किया है। वह कहती है – "एक वक्त था दोस्त! जिन्दगी की शर्तों पर जीति थी, मैं घिसट – घिसट। आज मेरी शर्तों पर जिन्दगी जीती है। जैसा मैं चाहती हूँ।"

गौतमी की भांति स्मिता का चरित्र भी बोल्ड और फेमिनिज्म है। स्मिता, हिम्मती, स्पष्टवादी, बेबाक और अपनी शर्तों पर जिन्दगी जीने का एक नया नमूना पेश करती है। वह यौन सम्बन्ध और दैहिक सुखों के मामले में पुरुषों की हद तक आखेटक है। कईयों के साथ तो इसके दैहिक सम्बन्ध भी थे।

आज के बदलते परिवेश, मानसिक सोच और आचरण के साथ परम्परा, रूढ़ियों को तोड़ आजाद होती युवा पीढ़ी आधुनिकता के खतरे से अनजान पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण कर स्वयं का विनाश करने पर तुली है। जिस स्वतंत्रता की आड में आज की युवा पीढ़ी उत्श्रृंखल हो वैवाहिक सम्बन्धों और कुटुम्बकीय जीवन को नकार स्वछन्द होकर यौन विचरण करती हुई मानवीय सम्बन्धों एवं मूल्यों को ताख पर रख स्वयं को स्थापित करना चाहती है, इसका बहुत ही सजीव चित्रण 'एक जमीन अपनी' में देखने को मिलता है। विज्ञापन व मॉडलिंग क्षेत्र के उपरी चमक–दमक, नाम, यश, पैसा, ग्लैमर की चाह में आज स्त्रियां स्वेच्छा से इस क्षेत्र में अपना कैरियर बना रहीं है। परन्तु जबरदस्त प्रतिस्पर्धा व एक–दूसरे से आगे निकलने की होड़ में नारी केवल भोग की वस्तु बनकर रह गई है। आदि काल से स्त्रियों का शोषण पुरुषों के द्वारा होते आ रहा है किन्तु जब स्त्रियां शिक्षित व जागरूक होने लगी है, अपने अधिकारों के प्रति सजग तथा आर्थिक रूप से मजबूत होने लगी एवं पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर हर क्षेत्रों में काम करने लगी है तो पुरुषों ने स्त्रियों को शोसित करने का तरीका बदल दिया।

धर्म की खोज पुरुषों द्वारा किया गया। धर्म के माध्यम से अनेक रूढ़ियों एवं परम्पराओं का जन्म होता है और ये रूढ़ि एवं परम्पराएँ नारी को और भी अधिक बंधनों में जकड़ लेता है। अब परम्पराओं एवं रूढ़ियों का विरोध केवल शिक्षित स्त्री ही नहीं कर रही बल्कि अशिक्षित, अनपढ़ स्त्री भी इसका विरोध करने लगी है। 'एक जमीन अपनी' में अंकिता, तिलक पर कटाक्ष करती है– "समय जरूर लगेगा मगर सीमाएँ हटेंगी—भोग्या और देवी के बीच पिसती हुई स्त्री के लिए आत्म सम्मानपूर्ण समाधान खोज ही लेगी।"[3]

सुनंदा की हत्या होने पर जब अन्ना साहब और पवार उसकी मय्यत को कंधा देते हैं तो विमलाबेन विजली की स्फूर्ति के साथ पवार को ठेल कर अर्थी को अपने कंधे पर टेक लेती है। सम्भवतः किसी स्त्री ने पहली बार किसी मय्यत का कैधा देने का दुस्साहस किया होगा। इस पर विमला बेन कहती है– "कूपमंडूक पुरुषों से हमें सीखना होगा कि स्त्रियों के लिए क्या शास्त्र–सम्मत है, क्या नहीं ? निर्दोष स्त्री की नृशंस हत्या करना शास्त्र–सम्मत है पाटिल ... मैं कंधा किसी और की मय्यत को नहीं दे रही, उस स्त्री चेतना को दे रही हूँ, जिसका गला घोटने की कोशिश हत्या के बहाने हुई है। मैं हर जाति, वर्ग, धर्म की स्त्रियों का आवाहन करती हूँ कि वे सब की सब श्मशान चलें और बारी–बारी से सुनन्दा की मय्यत को कंधा दें।" इस प्रकार स्त्रियों का विशाल जुलूस 'रामनाम' का उच्चारण करते हुए सुनंदा की अर्थी को कंधा देने लगा।

प्रेम में असफल स्त्री का चित्रण हमें चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में देखने को मिलता है। 'एक जमीन अपनी' में अंकिता सुधांशु से प्रेम करती है और अपने घर वालों के खिलाफ उससे रजिस्टर्ड मैरिज भी करती है, लेकिन सुधांशु के निरंकुश व्यवहार के कारण दोनों में झगडे होते रहते। अंकिता सुधांशु की हरकतों से विक्षुब्ध होकर तीन वर्ष के भीतर ही उससे अलग रहने लगती है।

'आवां' उपन्यास की नमिता भी प्रेम में असफल नारी है, जो धनाढ्य आभूषण व्यवसायी संजय कनोई से अंतः मन से जुड कर प्रेम करने लगती है। लेकिन विवाहित संजय कनोई अपना पुरुषत्व मात्र दिखाने के लिए नमिता से झुठा प्रेम का नाटक करता है और उसे गर्भवती बनाता है। नमिता आँख बंद कर संजय की बातों पर विश्वास कर स्वयं को उसे समर्पित कर देती है तथा वह गर्भवती हो जाती है। जब अन्ना साहब की मृत्यु की ख़बर नमिता पाती है तो उसका गर्भपात हो जाता है और गर्भपात होने पर संजय के दोगले व्यक्तित्व का पता चलता है। संजय आपे से बाहर होकर सच्चाई उगल देता है– "झुठी... प्राण ले लूंगा मैं तम्हारे... मुझे मेरा बच्चा चाहिए... बच्चा। जानती हो ? बाप बनने के लिए मैने तुम्हारे ऊपर कितना खर्च किया ? उस मामूली औरत अंजना वासवानी की औकात है कि तुम्हार ऊपर पैसा पानी की तरह बहा सके?"

भारतीय समाज पितृसत्तात्मक है और इसमें पुरुषों का वर्चस्व है एवं नारी को हेय दृष्टि से देखा जाता है। जो नारी सृष्टि का आधार है, समाज की नियामिका है, घर परिवार की महत्वपूर्ण धुरी है, समाज में अपने विविध रूपों में, घर और बाहर अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए, त्याग, समर्पण, प्रेम, स्नेह और ममता की सरिता प्रवाहित करते हुए दृष्टिगत होती है। वह नारी आज भी अपने प्रत्येक रूप में शोषित, पीडित व दमित है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि चित्रा मुद्गल जी ने अपने जीवन के विभिन्न खट्टे – मीठे अनुभवों को जिसे जिया व भोगा है, उसे ही अपने साहित्य में व्यक्त किया है। चित्रा मुद्गल के उपन्यासों में जो नारी जीवन का वर्णन मिलता है उसमें नारी घर की चहार दिवारी से बाहर निकलकर विज्ञापन व मॉडलिंग के क्षेत्र में काम कर रही है तथा आत्म निर्भर हो रही है। आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो स्वतंत्र व्यक्तित्व की तलाश कर रही है। आर्थिक स्वाबलम्बिता ने नारी के मन–मस्तिष्क पर व्यापक प्रभाव डाला है। आत्मनिर्भर हो रही नारी पुरुष के समान ही सर्वाधिकारों की भागी बन रही है एवं वह प्राचीन परम्पराओं, रूदियों व वर्जनाओं को तोड़ आधुनिकता को अपना रही है। चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य मैं नारी के पारम्परिक व आधुनिक दोनों रूप देखने को मिलते है। आधुनिकता के नाम पर कुछ नारियाँ स्वच्छन्द भी हो रही है। इनके के उपन्यासों में नारी पात्र अपने अस्तित्व व अस्मिता के प्रति सजग दिखायी देते हैं।

संदर्भ

1. चित्रा मुद्गल – एक जमीन अपनी, पृ० सं०– 73
2. चित्रा मुद्गल – आवां, पृ० सं० – 295
3. चित्रा मुद्गल – एक जमीन अपनी, वही, पृ० सं०– 360
4. वही, चित्रा मुद्गल – एक जमीन अपनी, पृ० सं० – 92
5. चित्रा मुद्गल – आवां, पृ० सं० – 153
6. वही, पृ० सं० – 539